National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(5): 32-34
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.विवेकानंद उपाध्याय,
हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, मध्य प्रदेश

Correspondence:
डॉ.विवेकानंद उपाध्याय,
हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, मध्य प्रदेश

शमशेर की काव्यानुभूति की बुनावट, विचारधारा और काव्य सम्वेदना

विवेकानंद उपाध्याय

टूटी हुई बिखरी हुई चाय की दली हुई पाँव के नीचे पत्तियाँ
मेरी कविता
ठंड भी एक मुस्कराहट लिए हुए है जो कि मेरी दोस्त है।

शमशेर आधुनिक हिंदी कविता में एक विशिष्ट पहचान और स्थान रखते हैं। वे अपनी कविताओं में शब्दों का सबसे किफायत से उपयोग करने वाले कवि हैं। छायावाद, प्रगतिवाद, और प्रयोगवाद की रचनाशीलता को समेटे उनकी कविताएँ छायावादी रहस्यमयता, प्रगतिशीलता और विविध प्रकार की प्रयोगधर्मिता की उत्कृष्ट उदाहरण हैं। लेकिन, वे कविताएँ छायावादी आलंकारिकता, प्रगतिवादी स्थूल वर्णनात्मकता और प्रयोगवादी शब्द कौतुक से दूर हैं। शमशेर की कविताएँ अर्थ का संकेत भर करती हैं। कविताओं में बिंब ग्रहण अपेक्षित होता है। लेकिन केवल बिंबों मे ही कविता हो तो अर्थ बोध में बाधा पैदा होती है। शमशेर घोषित रूप से वामपंथी थे। लेकिन, उनकी कविता किसी भी तरह के सामान्यीकरण या सरलीकरण से प्रायः दूर रही है। उनकी काव्यसंवेदना की जटिलता यह भी है कि उनकी कविताओं के मिजाज के बारे में कोई भी पूर्वधारणा या पूर्वग्रह हमारी मदद नहीं कर पाता। **उनकी सुन्दरता की मान्यता थी – "सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब हम पर है कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनंत और अपार लीला को कितना अपने अंदर घुला सकते हैं।**"[1] उपर्युक्त वक्तव्य शमशेर की काव्य दृष्टि का पता देता है। लीला भारतीय परंपरा की सनातनता के स्वभाव को व्यंजित करनेवाला केन्द्रीय शब्द है। लीला में रहस्यमयता और सामान्यजीवन अनुभव की तार्किकता का एक तरह से स्थगन होता है। यही स्थिति सुर्रियलिस्ट कला में भी होती है। शमशेर की कविता में मार्क्सवाद और अतियथार्थवाद(सुर्रियलिज्म) का यह तनाव लगातार दिखायी देता है।

उनकी कविताएँ प्रायः बिंबों में हैं इसलिए अलग – अलग पाठक उनमें अलग - अलग चित्र देख पाते हैं और कई बार कुछ भी स्पष्ट नहीं होता। इसका कारण यह है कि मुक्तिबोध मानते हैं कि शमशेर एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार की तरह कविता करते हैं। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने लिखा है,"नयी कविता के कवियों में शमशेर अपनी अलग पहचान बनाते हैं। उनकी कविता में जो खामोशी, अकेलापन, और भावोद्वेग की शांति है, जो काव्यानुभूति की सघनता, मितकथन और मौन है, जो स्मृतिबोध और अवसाद है उसका कारन उनके काव् व्यक्तित्व की गहराइयों में ढूँढा जा सकता है। ये भीतर कहीं बहुत गहरे मृत्यु को, काल की अनन्तता और अनिवार्यता को, सृष्टि की नश्वरता को स्वीकार करनेवाले कवि हैं। यह बोध उन्हें विनम्र ओर खामोस बनाता है
तथा एक विराट प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर और साथ ही प्रेम, करुणा और शान्ति के मूल्यों की ओर भी ले जाता है। यही उनके काव्य की सही जमीन है जिसे उनकी तमाम कविताओं के गहरे विश्लेषण से पाया जा सकता है।" ॥

बैल कविता की पहली पंक्ति है- मैं वह गुट्ठल काली कड़ी कूब वाला बैल हूँ। पहली पंक्ति में कवि अपने को बैल बताता है लेकिन, साथ ही अपना भूगोल भी विशेषणों की मदद से स्पष्ट कर देता है। यह नायक लघु मानव की तर्ज पर गढ़ा गया है। इसलिए गुट्ठल काली कड़ी कूब वाला है न कि छायावादी धीरोद्दात नायक जैसा या मुक्तिबोध के ब्रह्मराक्षस जैसा। शमशेर की कविता की संरचनात्मक विशिष्टता के बारे में मुक्ति बोध ने लिखा है, "शमशेर की संवेदनशील दृष्टि, भावप्रसंग के विशिष्ट पर टिकती है। यह विशिष्ट वास्तविकता का अटूट अंग है। वास्तविकता के सूत्रों में, वह गुम्फित और ग्रंथित है। इस विशिष्ट में एक नाटक है, एक कथानक है, कुछ पात्र हैं। एक पार्श्वभूमि है।" [III]

अपनी शाम के, अपनी सुबह के
बँधे हुए
चारे के लिए
उससे मीठी उससे नमकीन और प्यारी
चीज़
दुनिया में और कोई है क्या? .....
मगर मुश्किल यह है।
कि मालिक मेरी नस-नस को जानता और समझता है
वह मुझसे मेरी मूक भाषा में अच्छी तरह
बात करता है
मुझे वह इस तरह निचोड़ता है जैसे
घानी में एक-एक बीज कसकर दबाकर
पेरा जाता है...

शमशेर ने नागार्जुन की तरह अन्न को देव का दर्जा दिया है। अन्न उसी के लिये देव हो सकता है जिसके जीवन में उसका अभाव हो और वह उसके लिए अलभ्य वस्तु हो। चारे के लिए अन्न देव पद का प्रयोग बैल को भारतीय मनुष्य बना देता है।

कभी-कभी मैं अपने इसी श्रम में
कहाँ खो जाता हूँ, कुछ पता नहीं चलता
यह सारी दुनिया मुझे बैल मालूम होती है
बाँ॰ा॰ा॰ा॰ा! बाँ॰ा॰ा॰ा॰ा! बाँ॰ा॰ा॰ा॰ा !

बैल की यह पुकार मौन मूक श्रम की पुकार है जो प्रार्थनाओं की तरह अनसुनी और अनुत्तरित रह गयी है। बैल तो बैल ही है सारी दुनिया भी बैल हो गयी है। इसलिए बैल अब मनुष्यों की भाषा में नहीं बल्कि बैलों की भाषा में बात करने लगता है।शमशेर मानते हैं – "**काव्य-कला समेत जीवन के सारे व्यापार एक लीला ही हैं—और यह लीला मनुष्य के सामाजिक जीवन के उत्कर्ष के लिए निरंतर संघर्ष की ही लीला है**"[IV] इसलिए वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं, "**मेरी कविता के निर्माण में आसपास की साधारण-सी वस्तु भी जब सामने आती है तो मैं उसको अपने रंग में लपेटकर अपनी कविता में शामिल कर लेता हूँ।**"[V] शमशेर की काव्य भाषा बोलचाल के मुहावरे के नजदीक है। आरंभिक कविताएँ अवश्य तत्सम शब्दावली वाली हैं लेकिन आगे चलकर वे कविताएँ हिंदी उर्दू के दोआब होने का रास्ता पकड़कर आगे बढ़ती हैं। उनके प्रिय कवि निराला ने भी छायावाद के दायरे से बाहर निकलने में वही रास्ता अख्तियार किया था। विजय देव नारायण साही कहते हैं, "जब एक बार शब्दों को जकड़े हुए अर्थों के पाश टूट जाते हैं, तब उनकी इस नयी मुक्ति की अवस्था में, उन्हें नये- नये रिश्तों में जोड़ना संभव होने लगता है।..... ऐसी अवस्था में ऐसे शब्द आने लगते हैं जिनके साहचर्य की कल्पना पहले नहीं की गयी थी। ।"[VI] वामवाम वाम दिशा समय साम्यवादी लिखनेवाले शमशेर को ऊपर से देखकर लगता है कि वे कोई घोर साम्यवादी कवि होंगे और उनकी कविताएँ भी ऐसी ही होंगी। लेकिन स्थिति इसके ठीक विपरीत है। इस हकीकत के बारे में विजयदेव नारायण साही ने सही ही लिखा है, "वक्तव्य उन्होंने सारे प्रगतिवाद के पक्ष में दिए, कविताएँ उन्होंने बराबर वे लिखीं जो प्रगतिवाद की कसौटी पर खरी न उतरतीं।"[VII] किसी भि कवि के लिए यह महत्वपूर्ण होता है कि वह विचारधारा और रचना के स्तर पर कोई संतुलन किस हद तक साध पाता हे। शमशेर इस अर्थ में विशिष्ट हैं कि घोषित रूप से मार्क्सवादी होते हुए भी उनकी कविताएँ मार्क्सवाद की यांत्रिकता से मुक्त हैं और कई बार उससे बहुत दूर भी हैं।

रघुवीर सहाय ने 'टूटी हुई बिखरी हुई' कविता पर विचार करते हुए लिखा है,"शमशेर ने व्यक्ति की अपूर्णता की बेचैनी और पूर्ण होने की बेचैनी को एक ही व्यक्ति में समो दिया है। इससे अधिक गहरी, गाढ़ी, अँधेरी शांति और हो नहीं सकती। साधारण लोग इसी को प्रेम की पीड़ा कहते हैं। परंतु यह एक नया इनसान पैदा होने की पीड़ा है। जिसे असाधारण रूप से ताकतवर कवि ही झेल सकता है, जिस ने सब लाल हरी शक्लों और आवाजों को एक में मिला लिया हो।"[VIII] इसलिए खुद शमशेर ने प्रेम के बारे में कहा है, "मोहब्बत का जज्बा हमेशा एक बहुत पाक हस्ती अपनी जगह पर है, और जिस सीने में वह जोरों से धड़कने लगता है, उसको आपसे-आप एक नयी जिन्दगी बख्शता है।"[IX] शमशेर ने प्रेम के बारे में रवीन्द्र नाथ टैगोर के हवाले लिखा है,"ईश्वर से बढ़कर कोई किसी को प्यार नहीं कर सकता।(क्यों? कैसे?) क्योंकि वह हमें पूरी तरह आजाद छोड़ देता है। कभी किसी बात के लिए हम पर कोई दबाव नहीं डालता। इस पर भी नहीं कि हम उसे मानें कि वह है। इतना निःसंग, उतना बेगरज, इतना तटस्थ-और फिर वह हमारे रग-रग के सुख और दुख से वाकिफ है। वाकिफ है मगर कभी हमें यह जानने नहीं देता कि वह वाकिफ है। न हमसे मिलने का आग्रह, न हमें अपनी तरफ खींचने की रत्ती भर कोशिश।"[X] शमशेर की प्रेमानुभूति में एक लोकतांत्रिक भावना है। यहाँ प्रेम बाँधता नहीं मुक्त करता है। वह प्रेम के अतिरिक्त और कोई अपेक्षा नहीं करता।

हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं. जिनमें वह फँसने नहीं आतीं,
जसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं,जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पातीं,
तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मैं तुमसे करता हूँ।
इसलिए प्रेम की वह अनुभूति जब जीवन में उतरती है तब कुछ ऐसा घटित होता है जो बेहद आकर्षक और रहस्यमय होता है।
एक फूल ऊषा की खिलखिलाहट पहनकर
रात का गड़ता हुआ काला कम्बल उतारता हुआ मुझसे लिपट गया।
वह प्रेम जीवन में किस तरह से प्रवेश करता हे और अपनी जगह बनाता है यह देखने लायक है।
एक ख़ुशबू जो मेरी पलकों में इशारों की तरह बस गई है,
जैसे तुम्हारे नाम की नन्हीं-सस्पेलिंग हो, छोटी-सी प्यारी-सी, तिरछी स्पेलिंग,
आह, तुम्हारे दाँतों से जो दूब के तिनके की नोक उस पिकनिक में चिपकी रह गई थी,
आज तक मेरी नींद में गड़ती है।

शमशेर कहते हैं,"कला उसे कहते हैं जिसमें कम से कम उपादानों के साथ अधिक- से- अधिक प्रभाव पैदा किए जा सकें। शब्द कम हों। चित्र हैं तो रेखाएँ कम हों, रंगों का बहुत उपयोग न किया गया हो, मगर जो प्रभाव चाहिए वो उतने में पूरा अधिक से अधिक हो। ये यानि एक सूत्र मेरे मन में बैठा रहा है हमेशा- कि अधिक शब्द हों तो उसे और कम करो, और हों और भी कम करो।"[XI] शमशेर की कला और कविता तथा जीवन सब में एक प्रकार की मितव्ययिता और किफयत के साथ सावदानि दिखायी देती है। उपर्युक्त उद्धरण इसकी गवाही देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

I. शमशेर, विजयदेवनारायण साही द्वारा उद्धृत, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज पृ. 24 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971
II. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी,समकालीन हिंदी कविता, पृ.14
III. मुक्तिबोध, शमशेर मेरी दृष्टि में, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली- 1971 पृ.16
IV. पूर्वग्रह : नवम्बर-दिसम्बर, 1987 : 'शमशेर की सम्यक् समझ की ओर एक प्रारंभिक उपक्रम' लेख में विष्णु खरे द्वारा उद्धृत, पृष्ठ सं. : 38
V. अनभै साँचा : शमशेर जन्मशती विशेषांक : अक्तूबर-दिसंबर, 2011: 'शमशेर: कुछ यादें कुछ रचना प्रसंग' लेख में रामनिहाल गुंजन द्वारा उद्धृत, पृष्ठ सं. : 105
VI. विजयदेवनारायण साही शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट शीर्षक लेख, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज पृ. 37-38 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971
VII. विजयदेवनारायण साही शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट शीर्षक लेख, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज पृ. 26 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971
VIII. रघुवीर सहाय, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971पृ.128
IX. शमशेर, डायरी के अंश, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज,राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971पृ.132
X. शमशेर, डायरी के अंश, शमशेर, संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मलयज, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली-1971पृ.139
XI. शमशेर, विश्वनाथ प्रसाद तिवारीद्वारा उद्धृत,समकालीन हिंदी कविता, पृ.39